Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 6 No. : 11 Dec. - 2020

International Journal of Social Science & Management Studies

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

International Journal of Social Science & Management Studies

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	स्वर्ण जयंति ग्राम स्वरोजगार योजना का आलोचनात्मक अध्ययन	श्यामलाल अग्रवाल	1-4
2	ग्राम पंचायत व्यवस्था में अनुसूचित जनजाति महिलाओं की राजनीति में भागीदारी	बबलु सिंह भोसले	5-9
3	कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा : चुनौतियाँ और संभावनाएँ	डॉ. पवन सावदेवा	10-12
4	अनुसूचित जाति के अंतर्गत अहिरवार जाति में सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन	आजाद सिंह डॉ. भारती	13-17
5	महात्मा गाँधी का समाज चिन्तन	डॉ. कौशलेन्द्र वर्मा	18-22
5	प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण और गांवों में बुनियादी जीवन में सुधार : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	रत्नेश कुमार	23-26
6	महाभारत में वर्णित सामाजिक संरचना के विविध आधार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	रंजना झा	27-33
7	महाभारत के शान्तिपर्व में धार्मिक संदर्भ	गुड्डी कुमारी	34-38
8	स्वामी विवेकानंद के दर्शन में नव्य वेदान्त एवं धर्म का समावेशी चिंतन : एक अध्ययन	डॉ. प्रीती रानी	39-41
9	महिलाओं में सामाजिक–राजनैतिक जागरूकता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मुक्ता प्रसाद	42-48
10	व्यासकृत महाभारत में शरीर रचना–विज्ञान	रेणुका सिन्हा	49-52
11	गुप्तोत्तरकाल के परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज	डॉ. प्रमोद राय	53-55
12	भारतीय दर्शन में साम्यवाद	डॉ. दिवाकर कुमार	56-58
13	महाकवि विद्यापति का साहित्यिक अवदान	डॉ. गार्गी कुमारी	59-61
14	किशोर बालिकाओं के पारिवारिक, स्वास्थ्य संबंधी, साामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन	रेखा जामोद	62-65
15	जीवन के लिये स्वस्थ हृदय	डॉ. अनिल कुमार पचौरी	66-67
16	जीवन के विकास में मानसिक धरातल का महत्व	डॉ. राहुल पचौरी	68-69
17	कमरदर्द में योगिक चिकित्सा	प्राची इंदुरकर फुलझेले	70-71
18	जबलपुर जिले के आर्थिक विकास में उद्योगों की स्थिति पर अध्ययन	प्रमोद विश्वकर्मा	72-77
19	कोविड–19 लॉकडाउन और महिलाओं के खिलाफ बढ़ते दुर्व्यवहार पर एक विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ. चन्द्रकांता जैन भारती यादव	78-84
20	विद्यालयों में दलित छात्राओं की भागीदारी एवं सामाजिक, आर्थिक समस्या : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	अश्वनी कुमार	85-88

International Journal of Social Science & Management Studies - I.J.S.S.M.S.
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 6, No. – 11, Dec. - 2020
2020

कोविड–19 लॉकडाउन और महिलाओं के खिलाफ बढ़ते दुर्व्यवहार पर एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. चन्द्रकांता जैन
सहायक प्राध्यापिका, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
भारती यादव
शोध छात्रा, शिक्षा शास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रस्तावना :– नोबेल कोरोना वायरस या कोविड–19 यर्थाथता में एक ऐसा शब्द है जिससे इस भूमण्डलीकरण के दौर में शायद ही कोई व्यक्ति अछूता रहा हो। इस भयंकर महामारी (कोविड–19) के कारण जनजीवन काफी ज्यादा प्रभावित हुआ, जिसकी वजह से मानवीय जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।[1] विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार यूरोप, अमेरिका और भारत समेत अब दुनिया के 140 देशों में कोरोना वायरस (कोविड–19) फैल गया है।

कोरोना वायरस अति सूक्ष्म लेकिन एक खतरनाक वायरस है इसके संक्रमण से जुकाम और सांस लेने में दिक्कत जैसी समस्याएँ हो सकती है। कोविड–19 वायरस कोरोना वायरस का ही एक प्रकार है। इस वायरस का संक्रमण दिसम्बर 2019 में चीन के बुहान शहर में शुरू हुआ था।[2] विश्व में कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या 3 करोड़ से अधिक हो गई हैं। भारत में इससे संक्रमित लोगों की संख्या 52.14 लाख से ज्यादा हो गई है। कोरोना वायरस का कहर लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अब तक इस वायरस पर काबू पाने के लिए कोई टीका या वैक्सीन भी नहीं बना है। हांलाकि स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा कोरोना वायरस से बचाव के लिए कुछ दिशा–निर्देश जरूर जारी किये गये हैं जैसे कि – हाथों को साबुन से धोना, अलकोहल आधारित हैंड रव का इस्तेमाल करना, खांसते और छींकते समय नाक और मुंह को रूमाल या टिशयू पेपर से ढ़कना, आपस में उचित दूरी रखना आदि।[3] इस विश्वव्यापी महामारी कोविड–19 के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए लॉकडाउन लागू किया गया जिसके चलते विश्व की आबादी का बड़ा हिस्सा घरों तक ही सीमित हो गया और इस महामारी के कारण उत्पन्न हुई आर्थिक व सामाजिक चुनौतियों साथ ही आने जाने पर पाबन्दी लगने से लगभग सभी देशों और विदेशों में महिलाओं व लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार के मामलों में अधिक वृद्धि हुई। संयुक्त राष्ट्रमहासचिव एंटोनियों गुटरेस ने कहा कि ,हिंसा महज रणक्षेत्र तक ही सीमित नहीं है और कई महिलाओं और लड़कियों के लिए सबसे ज्यादा खतरा तब होता है जब उन्हें अपने घरों में सबसे सुरक्षित होना चाहिए। अर्थात् महिलाएँ अपने घर में ही सुरक्षित नहीं है,[4] इन विकट परिस्थितियों में भी महिलाओं और लड़कियों के विरूद्ध दुर्व्यवहार के मामलों में भारी वृद्धि ही नहीं हुई बल्कि उनके उपर हिंसा करने के तरीके भी जटिल अपनाए जा रहे हैं। जिन महिलाओं पर कोरोना वायरस से संक्रमित होने का सिर्फ संदेह ही है चाहे उसका कोई आधार भी न हो तब भी उन्हें लॉकडाउन के दौरान भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है।[5] जबकि लॉकडाउन का एक मात्र उद्देश्य है मानवीय जीवन की रक्षा करना है।[6]

लॉकडाउन क्या है :– लॉकडाउन एक प्रशासनिक आदेश होता है। लॉकडाउन को एपिडामिक डीजिज एक्ट 1897 के तहत लागू किया जाता है। ये अधिनियम सम्पूर्ण भारत पर लागू होता है।[7]

लॉकडाउन से तात्पर्य तालाबन्दी से है। यह एक आपातकालीन व्यवस्था है जो किसी आपदा या महामारी के समय लागू किया जाता है, जिस क्षेत्र में लॉकडाउन किया जाता है उस क्षेत्र के लोगों को घरों से बाहर निकलनें की अनुमति नहीं होती हैं। तालाबन्दी के समय लोगों को सिर्फ दवा और खाने–पीने जैसी अति आवश्यक चीजों के लिए बाहर आने की अनुमति मिलती है, इसका साधारण सा अर्थ यह है कि आप अनावश्यक कार्य के लिए बाहर न निकलें यदि लॉकडाउन के दौरान किसी भी प्रकार कि परेशानी हो रही है तो आप संबंधित पुलिस थाने, जिला कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, अथ्वा अन्य उच्च अधिकारी को फोन कर सकते हैं। लॉकडाउन सभी की सहूलियत और सुरक्षा के लिए किया जाता है।[8] लॉकडाउन का सरकार के द्वारा कड़े नियमों से पालन करवाया जाता है। इस महामारी के प्रकोप के कारण लाखों लोग अपनी जान गवां चुके हैं। कोविड–19 का संक्रमण एक इंसान से दूसरे इंसान तक बहुत तेजी से फैलता है जिसके कारण लॉकडाउन को ही इससे बचने का सही रास्ता बनाया गया ।[9] कोरोना वायरस जैसी भयंकर महामारी पर नियंत्रण पाने में जहाँ एक तरफ लॉकडाउन निश्चित ही एक प्रभावकारी उपाय साबित हो रहा है, वहीं दूसरी